B.A Part-1 (H) Philosophy

डा० अनीमा कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

Date / / Page

जैन-दर्शन का नयवाद की व्याख्या करें ?

Ans:-> किसी भी पदार्थ का प्रतिपादन करके उसका सप्रमाण किया जाता है। उदाहरणार्थ - किसी के द्वारा शरीर का विविध-प्रकार से सप्रमाण वर्णन करने के पश्चात् यह निर्णय किया जाता है कि वह पार्थिक है। इस प्रकार का यह वस्तु विवेचक परामर्श अथवा निर्णय, जैन-दर्शन की भाषा में 'नय' कहलाता है। वस्तु की, अनेकरूपता के कारण 'शरीर पार्थिव है', यह निर्णय किसी प्रकार सहृदय भी हो सकता है, क्योंकि ऐसी अवस्था में यह सोच लिया जाता है कि वस्तु की अनन्तरूपता के कारण उसके समग्र तत्वों का वर्णन असंभव है, परन्तु जिस एक देशी तत्व का वर्णन निर्णय में समाविष्ट है, वह सत्य तो है। परन्तु जब निर्णायक का अपना निर्णय असंभव है, परन्तु जिस एक देशी तत्व का वर्णन निर्णय में समाविष्ट है, वह सत्य तो है। परन्तु जब निर्णायक का अपना निर्णय अपने वक्तव्य में 'एव' या 'ही' के निवेश के द्वारा उसके एकदेशित्व का निश्चय करके अन्य तत्वों की संभावना को भी दूर कर देता है तो उसका यह निर्णय - सर्वथा असत्य हो जाता है। इसलिए इस प्रकार से युक्त निर्णय - दुर्णय कहलाता है। वस्तु की अनेकरूपता को समझकर किसी वस्तु के एक रूप की सत्ता का निर्देश प्रामाण्य होते हुए भी सत्य नहीं हो सकता। इसलिए 'नय' प्रमाण नहीं हो सकता। प्रमाण तभी हो सकता है, जब हम अपने निर्णय में ऐसे शब्द का प्रयोग करें जिससे उस वस्तु सत्ता की अनन्तता तिरोहित न हो। इसलिए कथन में प्रामाणिकता लाने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने निर्णय में 'स्यात्' शब्द का प्रयोग करें।

जैन-दर्शन के अनुसार अन्य सभी दर्शनों के सिद्धांत प्रायः नय अथवा दुर्णय की कोटि में आते हैं। प्रमाण तो केवल तत्वदर्शी महावीर के वचन ही हैं। वस्तु के परामर्श के लिए 'नय' भी मान्य हो सकता है, किन्तु 'दुर्णय' कभी नहीं। इस संबंध में प्रसिद्ध जैन दार्शनिक हेमचन्द्र का कथन है :-

सदेव सत्स्यात सदिति त्रिधार्थो
मीयेत दुर्नीति नयप्रमाणैः। यथार्थ दर्शीतु नय प्रमाण-पथेन दुर्नीतिपथं त्वमास्यः। अन्ययोग व्यवच्छेदिका। अर्थात 'सत् एव', सत स्यात्सत सत् - इन तीन प्रकारों से किसी पदार्थ का निरूपण क्रमशः दुर्णय, नय और प्रमाण कहलाता है। हे वर्धमान! आप वास्तव में यथार्थदर्शी हैं कि नय और प्रमाण के मार्ग से दुर्णय को निरस्त कर दिया।